5

बच्चों की शिक्षा में शिक्षक-अभिभावक संबंध की भूमिका एक विश्लेषण

अखिलेश यादव*

प्रस्तुत शोध पूर्णतः प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8) को केंद्रबिंदु में रखकर किया गया है। शोध में शोधार्थी ने बतलाया है कि बच्चों की शिक्षा में अभिभावक-शिक्षक संबंध का अच्छा होना बच्चों की शिक्षा के लिए सकारात्मक होता है। शोध में वर्णित शिक्षक-अभिभावक संबंध से शोधार्थी का आशय है—अभिभावकों एवं शिक्षकों के मध्य संपर्क से। जब हमारे मन में एक शिक्षक का दृश्य चित्रित होता है तब शिक्षक की क्या अभिधारणा होती है क्या हम शिक्षक को पाठ्यचर्या एवं पुस्तक से बढ़ा कक्षीय ज्ञान प्रदाता के रूप में देखते हैं। प्राय: यह देखा गया है कि जब भी विद्यालय ने बच्चों को घर में अपने अभिभावक के साथ पढ़ने के लिए प्रेरित किया, तो ऐसा सामने आया कि उन्हें उन बच्चों के मुकाबले अधिक फ़ायदा हुआ है जो सिर्फ़ विद्यालयों में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। बच्चों की भाषा विकास में उसके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। रायपुर के प्राथमिक विद्यालय के अवलोकन के पश्चात् लेखक ने पाया कि विद्यालय में नियमित (दो माह के अंतराल पर) शिक्षक-अभिभावक संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। जिसमें अभिभावकों के सहयोग से बच्चों के शैक्षिक बाधक तत्वों की पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है एवं बच्चों के पालन-पोषण के मुद्दों पर चर्चा की जाती है। साथ ही अभिभावकों की मदद से कैसे बच्चों में पढ़ने की संस्कृति विकसित की जा सकती है, लेख में इस पर भी चर्चा की गयी है। बच्चों के कक्षा ज्ञान को अभिभावकों की मदद से वास्तविक जीवन से जोड़ा एवं उपयोग किया जा सकता है। अंत में कहा जा सकता है कि एक बच्चे के जीवन में दो महत्वपूर्ण स्तंभ शिक्षक एवं अभिभावक होते हैं जिनके मध्य सकारात्मक संबंध का होना अति आवश्यक होता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में कहा गया है कि उर्वर एवं सुदृढ़ शिक्षा का सृजन सदैव बच्चे की भौतिक व सांस्कृतिक मिट्टी में होता है, उसी में उसकी जड़ें जमी होती हैं तथा उसका पोषण माता-पिता, शिक्षकों, सहपाठियों व समुदाय के साथ अंत:क्रिया के माध्यम से होता है। अभिभावक, परिवार प्रणाली के महत्वपूर्ण घटक हैं। वे अपने बच्चों के वयस्क होने तक उनकी देखरेख की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी निभाते हैं।

* *शोधार्थी* (पी.एच.डी), केंद्रीय शिक्षा संस्थान (शिक्षा शास्त्र विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

परिवार बच्चों को सामाजिक बनाने की प्रक्रिया बड़े हद तक पूरी करता है और उसके मानसिक विकास को भी प्रभावित करता है। इस नज़रिये का समर्थन विभिन्न मानवशास्त्रीय अध्ययनों और शोधों में भी किया गया है। परिवार के सदस्यों के जेंडर के आधार पर उनकी भूमिका निर्धारित करने का काम भी परिवार करता है। वह उनके आपसी व्यवहार, अंतरसंबंध, समुचित सामाजिक रवैये आदि को भी स्थापित करता है। परिवार संदर्भों का एक ऐसा आधारभूत ढाँचा तैयार करता है, जिसकी मदद से बच्चा समाज को देखता-समझता है।

बच्चा एक तरफ स्कूल में औपचारिक शिक्षा और दूसरी ओर अपने घर में एक अलग तरह की शिक्षा प्राप्त करता है और अकसर अपेक्षाकृत गहरी शिक्षा उसके अभिभावक और उसका पारिवारिक माहौल देते हैं। बच्चों का शिक्षकों से असंवाद की स्थिति के कारण बचपन से ही बच्चों के मन में जाने-अनजाने एक द्वंद्व पैदा हो जाता है जो अकसर पूरी ज़िंदगी किसी न किसी रूप में उनके साथ रहता है। इस संवादहीनता या अपर्याप्त संवाद के कई कारण हैं। इनके कुछ तो व्यावहारिक संगठनात्मक कारण हैं और कुछ स्पष्ट रूप से उन संस्कारों का हिस्सा हैं, जिन्हें देख-समझ कर, प्रयास करके, बातचीत करके दूर किया जा सकता है। व्यावहारिक कारणों में मुख्यधारा के स्कूलों में छात्रों की भीड़ भी एक कारण है। इस असंवाद की स्थिति को अभिभावक-शिक्षक संबंध के माध्यम से दूर किया जा सकता है।

शिक्षक-अभिभावक संबंध के मायने

अभिभावकों की भागीदारी और विद्यार्थी की सफलता के बीच सकारात्मक संबंध होता है। अपने बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों या परिवार की हिस्सेदारी किसी भी अन्य सुधार कार्यक्रम की अपेक्षा कहीं ज़्यादा असरदार होती है। शिक्षकों को अभिभावक-अध्यापक साझेदारी का महत्त्व समझते हुए अभिभावकों को उनके बच्चों की शिक्षा में भागीदार बनाना चाहिए। शिक्षक के तौर पर उसे यह जानना चाहिए कि अभिभावकों का सहयोग आप कैसे प्राप्त कर सकते हैं। भारत में सर्व शिक्षा अभियान जैसे सरकारी कार्यक्रम के तहत विद्यालय के प्रबंधन के लिए ग्राम शिक्षा समिति तथा अभिभावक-अध्यापक संघ जैसे ढाँचों को सुनिश्चित किया गया। गाँव के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को साथ लेकर ये संस्थाएँ प्राथमिक विद्यालयों के कामकाज और उनकी सुविधाओं की देखरेख करती हैं। इस तरह वे विभिन्न वर्गों से आने वाले सामाजिक या शारीरिक तौर पर वंचित बच्चों की शिक्षा संबंधी ज़रूरतों को लेकर जागरुकता पैदा करने के काम में स्थानीय समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित कर पाती हैं। ऐसे बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई में दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित होते हैं और विद्यालय की शैक्षणिक प्रक्रिया में सांस्कृतिक तथा पारंपरिक तौर पर अपना योगदान दे पाते हैं। नरेश लाल शाह (2013) ने अपने लेख 'समुदाय को सरकारी शिक्षा पर भरोसा है' में शिक्षक-अभिभावक संबंध के संदर्भ में बतलाते हैं कि शिक्षकों की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि किस तरह से बच्चों के अभिभावक घर पर बच्चों की सहायता करें। समय पर उनको कापियाँ, पेंसिल दें और बच्चों को पढ़ने के लिए घर पर प्रेरित करें। इस हेतु इन्होंने बतलाया कि राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मथोली, चिन्याली सौड की विद्यालय प्रबंध समिति एवं अभिभावकों के मध्य संवाद कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। जिसमें

अधिकांशतः अभिभावक ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंध रखते हैं। इनको बतलाया गया कि बच्चे की घर पर उचित देखभाल के माध्यम से शिक्षा का उपयुक्त वातावरण बनाया जा सकेगा। कभी-कभी विद्यालय ही अभिभावकों से संवाद हेतु गाँवों में चला जाता है। जिसका फ़ायदा यह हुआ कि जो अभिभावक विद्यालय नहीं आ पाते हैं उनसे भी शिक्षक संपर्क स्थापित कर पाते हैं और बच्चों की शिक्षा से जुड़े मुद्दों को बच्चों के परिवार के साथ चर्चा करते हैं।

विद्यालयी शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी के मामले में कोलमैन रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण कदम था। इस रिपोर्ट में पहली बार स्वीकार किया गया कि बच्चों की शिक्षा तथा उनकी उपलब्धियों में परिवार का सबसे अहम स्थान है। यह रिपोर्ट 1960 के दशक में आई थी। तब से लेकर आज तक इस बारे में जितने भी अध्ययन हुए, उन सबमें कुछ ऐसा ही परिणाम सामने आया है। इससे पहले यही माना जाता रहा था कि विभिन्न विद्यालयों में बच्चों की उपलब्धियों के उच्च मानक विद्यालय के संसाधनों,अध्यापकों तथा अन्य कारकों के परिणामस्वरूप हैं। कोलमैन रिपोर्ट अमेरिका के 1900 प्राथमिक विद्यालयों में कराए गए सर्वेक्षण पर आधारित थी। इस अध्ययन में यह भी बताया गया था कि परिवारों की श्रेणी तथा उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति से परे, जब कभी विद्यालयों ने बच्चों को घर में अपने माँ-बाप के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्हें ऐसे बच्चों के मुकाबले कहीं ज़्यादा फायदा हुआ जो सिर्फ़ विद्यालयों में अपने अध्यापकों के साथ पढ़ते थे। यह भी देखा गया कि बच्चे के विद्यालयों में दाखिला लेने के पहले ही उसकी जातीय तथा सामाजिक श्रेणी की उपलब्धियों का असर उस पर हावी हो चुका होता है। इस दरम्यान उसकी शैक्षणिक प्रवीणता घटित हो चुकी होती है। इस परिवर्तन के पीछे जो कारण सुझाए गए हैं, उनमें एक यह है कि परिवारजन कहीं ज़्यादा समय तक बच्चे को पढ़कर सुनाते रहते हैं। अल्प आय परिवारों में बच्चे को औसतन 25 घंटे पढ़कर सुनाया जाता है, जबकि मध्यम आय वाले परिवारों में यह औसत 1700 घंटे का देखा गया है।

शिक्षकों-अभिभावकों की भागीदारी और बच्चे की उपलब्धियों में सकारात्मक संबंध की पुष्टि के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं --

- माता-पिता द्वारा बच्चों को कहानियों की किताबें पढ़कर सुनाने से बच्चों की भाषा परिष्कृत होती है और उनमें पुस्तक प्रेम जागता है।
- माता-पिता द्वारा बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा कहानियाँ सुनाने से उनकी साक्षरता योग्यता में वृद्धि होती है।
- माता-पिता द्वारा बच्चों के साथ बिताई गई अवधि का सीधा असर बच्चे के विकास और विद्यालय की उपलब्धियों पर पड़ता है।

यूनेस्को (1990) ने अपने दस्तावेज़ में शिक्षक-अभिभावक संबंध के महत्त्व को बतलाया, जो निम्नलिखित है—

1. परिवार की जीवन शैली यदि जानी-पहचानी होती है तो वह बच्चे को विद्यालय में ज़्यादा और बेहतर सीखने लायक बनाती है।
2. अभिभावक और बच्चे के बीच का संबंध यदि भाषा की दृष्टि से समृद्ध और भावात्मक समर्थन देने वाला होता है तो इससे बच्चे को लाभ होता है।

3. यदि माता-पिता अपने बच्चे को सुरक्षित जीवन देते हैं, उन्हें समय का सही उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं और साथ-साथ पारिवारिक जीवन के सामान्य अंग के तौर पर उनके साथ अनुभव बाँटते हैं तो इससे बच्चे विद्यालय में बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं।
4. माता-पिता यदि अपने बच्चों के सामने मानक स्थापित करते हैं तो बच्चे उन मानकों को गंभीरता से ग्रहण करते हैं।
5. बच्चे अपने माता-पिता और शिक्षकों के बीच होने वाली दो-तरफा बातचीत से भी लाभान्वित होते हैं।
6. विद्यालय से अभिभावकों के संबंध का मतलब है कि उनका संबंध अपने बच्चे से तो बना रहता ही है, शैक्षणिक संस्थान के अलावा वह दूसरे बच्चों के अभिभावकों के साथ भी बना रहता है।
7. घर के माहौल को बेहतर बनाने के लिए माता-पिता को कई तरह से प्रशिक्षित किया जा सकता है और अकसर इसके सकारात्मक परिणाम निकलते हैं।
8. विद्यालय को चाहिए कि बच्चे के साथ परिवार को जोड़ने के मामलों में वह हरेक परिवार के साथ अलग-अलग तरह की रणनीति अपनाए, क्योंकि विद्यालय के साथ सभी परिवारों के संबंध अलग-अलग तरह के ही होते हैं।

हाल के वर्षों में विद्यालय में अभिभावकों की भागीदारी को एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक रणनीति के तौर पर देखा जाने लगा है। प्रत्येक विद्यालय को चाहिए कि वह ऐसी साझेदारी को बढ़ावा दे जो अभिभावकों की भागीदारी को बढ़ाने के साथ ही बच्चे के सामाजिक, मानसिक और शैक्षणिक विकास में सहयोगी हो। शैक्षणिक सुधारों के इस दौर में अनेक शोध अध्ययनों और वर्षों के अनुभवों से जो यह बात सामने आई है कि अभिभावकों तथा परिवार की भागीदारी से विद्यार्थी की उपलब्धि और उसकी सफलता बढ़ती है। पालीवाल रश्मि (2010) शिक्षक-अभिभावक संबंध के महत्त्व के संदर्भ में बतलाती है कि बच्चों की शिक्षा में प्रगति हेतु बच्चों को प्रोत्साहन अति आवश्यक है, बच्चों की कमज़ोरियाँ क्या हैं यह अभिभावक से सपंर्क साधकर ज्ञात किया जा सकता है। साथ ही अगर किसी बच्चे के अभिभावक अशिक्षित होते हैं तब इसका असर बच्चे की शिक्षा पर भी पड़ता है, किंतु इस असर को काफ़ी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। जिसका एक बेहतरीन माध्यम है शिक्षक एवं अभिभावक का समय-समय पर आपसी संपर्क बनाये रखना।

एक शोध के दौरान प्राथमिक विद्यालय, रायपुर, गाज़ीपुर, उत्तर प्रदेश का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी के साथ शिक्षकों से विचार-विमर्श करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहाँ यह जानकर अच्छा लगा कि विद्यालय के द्वारा किए जाने वाले कार्य समुदाय एवं अभिभावकों की भागीदारी के बिना नहीं किये जाते हैं। जैसाकि प्राथमिक विद्यालय, रायपुर के शिक्षक बतलाते हैं कि हमारे विद्यालय में समय-समय पर अभिभावकों से संपर्क स्थापित किया जाता है एवं बच्चों की शिक्षा में बाधक तत्वों की पहचान कर दूर करने के उपायों पर अभिभावकों से चर्चा की जाती है जिससे बच्चों की शिक्षा एक निरंतर प्रवाह के साथ बढ़ती रहे। शिक्षक बतलाते हैं कि विद्यालय में प्रत्येक दो महीने में एक बार शिक्षक-अभिभावक संपर्क कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। कार्यक्रम में अग्रलिखित कार्य किये जाते हैं—

1. बच्चों की शैक्षिक प्रगति, कमज़ोरियों एवं शिक्षा में बाधक तत्वों (आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक) और दूर करने के उपायों के संबंध में अभिभावकों से परिचर्चा की जाती है। जो अभिभावक आर्थिक रूप से कमज़ोर हैं उनके बच्चों को विभिन्न माध्यमों से सहायता प्रदान की जाती है, साथ ही उन अभिभावकों से चर्चा भी की जाती है जो सामाजिक रूप से पिछड़े समाज से संबंधित हैं। उनको समझाया जाता है कि बच्चों का श्रम कम से कम मात्रा में घर के कार्यों में इस्तेमाल किया जाये, क्योंकि सामाजिक रूप से पिछड़े समाज के लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने, कारण परिवार के सभी सदस्य मिलकर आर्थिकोपार्जन करते हैं। इस कारण बच्चों को घर पर पढ़ने के लिए उपयुक्त समय एवं साधन नहीं मिल पाते। यह समस्या शिक्षक-अभिभावक संबंध के माध्यम से दूर कि जा सकती है।
2. बच्चों के पालन-पोषण से संबंधित मुद्दों पर अभिभावकों से चर्चा की जाती है, जैसे—बच्चों को कैसे नकारात्मक वातावरण से बचाया जाए, बच्चों को खेलने के उचित अवसर भी प्रदान किये जाएँ आदि। ऐसा देखा गया है जब बच्चों को स्वतंत्रता से दूर रखा जाता है तब उनमें कुंठा की भावना ग्रसित हो जाती है इस प्रकार के बच्चे परिवार से दूर हो जाते हैं यह प्रवृत्ति समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है।
3. कक्षा ज्ञान एवं वास्तविक जीवन-आधारित ज्ञान के संदर्भ में अभिभावकों से चर्चा की जाती है कि अभिभावकों के छोटे-छोटे प्रयास के माध्यम से कक्षा ज्ञान को जीवन से जोड़ा जा सकेगा, जैसे—घर पर नाप तौल एवं वजन करने की प्रक्रिया को गणित की कक्षा से जोड़ने से बच्चों को गणित सरल तरीके से समझ में आ जाएगी। इन प्रक्रियाओं में अभिभावक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है, क्योंकि अभिभावक बच्चों को नाप तौल एवं वजन करने की प्रक्रिया की जानकारी कराकर शिक्षकों की मदद करते हैं। कक्षा ज्ञान को वास्तविक जीवन से नहीं जोड़ा गया तो बच्चों के मन में कक्षा ज्ञान के प्रति भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है।
4. अभिभावकों की मदद से बच्चों में पढ़ने की संस्कृति विकसित करने का प्रयास किया जाता है। अभिभावकों को समझाया जाता है कि पढ़ने की संस्कृति के विकास में आपका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है। आप अपने बच्चों को पढ़ने के लिए रोचक पुस्तकें, पत्रिकाएँ आदि उपलब्ध कराएँ साथ ही घर के पढ़े-लिखे लोग बच्चों के साथ पुस्तकें लेकर बैठ जाएँ, जिससे बच्चों में भी पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित होगी।

शिक्षक एक बच्चे की तरफ इशारा करते हुए बतलाते हैं कि शुभम जब सात वर्ष का था तो उसके पिता स्कूल में दाखिला कराने लाये थे और शुभम के पिता ने बतलाया था कि शुभम को पाँच वर्ष की उम्र में एक इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाखिला करा दिया था। दो वर्ष तक उसने उस स्कूल में शिक्षा प्राप्त की, किंतु शुभम की शिक्षा में कोई प्रगति नहीं हुई, क्योंकि शुभम की मानसिक स्थिति सामान्य बच्चों के समान नहीं थी। शुभम के सिखाने की गति सामान्य बच्चों से धीमी है, किंतु इस प्रकार के बच्चों को सामान्य कक्षा में सिखाया जा सकता है। आज शुभम चौथी कक्षा

में पढ़ाई कर रहा है वह भी सामान्य बच्चों के साथ, ऐसा संभव हुआ उसके अभिभावकों एवं हम शिक्षकों के मिले-जुले प्रयास से हम शिक्षकों ने शुभम के अभिभावकों को समझाया "शुभम की थोड़ी अतिरिक्त देखभाल कर उसकी की शैक्षिक स्थिति को सुधारा जा सकता है। आप घर पर अतिरिक्त समय में शुभम को अध्यापन कार्य कराएँ जिससे शुभम की शैक्षिक स्थिति में सुधार लाया जा सकेगा।" (पाण्डे, 2010)। शिक्षक अभिभावक के संबंध संदर्भ में बतलाती हैं कि पहली कक्षा के शिक्षकों के लिए बहुत ज़रूरी है कि बच्चों के अभिभावकों से उनका संवाद लगातार बना रहे क्योंकि गृह शिक्षक के रूप में अभिभावकों की भूमिका को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। बच्चों के संबंध में शिक्षक और गृह शिक्षक यानि अभिभावक दोनों सजग रहें और दोनों का ही पर्याप्त स्नेह और उचित मार्गदर्शन बच्चे को मिले तब पहली कक्षा के बच्चों के लिए विद्यालयी जीवन सुखद अहसास बन सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जायेगा कि किसी बच्चे के जीवन में उसके अभिभावक, शिक्षक, परिवार एवं आस-पास के समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अभिभावक एवं शिक्षक ही वह कड़ी है जिनके सानिध्य में बच्चा सबसे अधिक समय व्यतीत करता है। किसी भी बच्चे की माता उसकी प्रथम शिक्षिका होती है। अभिभावक एवं शिक्षक के सानिध्य में ही बच्चा समाजीकरण की प्रक्रिया सीखता है। किसी भी बच्चे के भाषा विकास में परिवार की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है, खासकर बच्चे के शुरुआती जीवन के वर्षों तक। बच्चों की शिक्षा में अभिभावक एवं शिक्षक महत्वपूर्ण स्तंभ होते हैं, अगर ये दोनों महत्वपूर्ण स्तंभ आपस में नहीं जुड़ पाएँगे तो बच्चों का शैक्षिक विकास सुचारू रूप से नहीं हो पायेगा। अभिभावकों की विद्यालयी शिक्षा में भागीदारी बढाने में अभिभावक संपर्क कार्यक्रम एवं ग्राम शिक्षा समिति की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। जैसाकि *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में बतलाया गया है कि 'सभी स्कूलों को इस प्रकार के तरीके खोजने की आवश्यकता है जिससे विद्यालय में अभिभावकों की ज़्यादा से ज़्यादा भागीदारी बढ़ सके।'

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005*. एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली.

पाण्डे, लता. 2010. 'पहली कक्षा का शिक्षक'. *प्राथमिक शिक्षक*, अंक 3-4, वर्ष 34. एन.सी.ई.आर.टी,नयी दिल्ली.

पालीवाल, रश्मि. 2010. 'राह बनाते शिक्षक'. *प्राथमिक शिक्षक अंक 3-4*, वर्ष 34 . एन.सी.ई.आर.टी,नयी दिल्ली.

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी. 2018. *लर्निंग कर्व* (शिक्षक, विशेषांक). अंक 14. अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, बेंगलुरु.

यूनेस्को. 1990. 'रीडिंग सैम — पैरेन्ट्स एंड लर्निंग'. *यूनेस्को — इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ़ एजुकेशन*, इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ़ एजुकेशन. पेरिस.

शाह, नरेश लाल. 2013. 'समुदाय को सरकारी शिक्षा व्यवस्था पर भरोसा है'. *प्रवाह*. अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन. उत्तराखण्ड स्टेट इंस्टीट्यूट, देहरादून. उत्तराखण्ड